RNI No.: DEL/BIL/2004/14598

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

Youngster

Where dream Chisels into reality

YOUNGSTER • ESTABLISHED 2004 • NEW DELHI • September 2023 • PAGES 4 • PRICE 1/- • MONTHLY BILINGUAL (HIN./ENG.)

'वर्चस्व 2023' के ग्रैंड फिनाले का तालकटोरा स्टेडियम में भव्य आयोजन

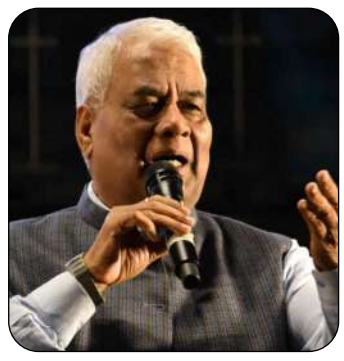

नई दिल्ली (यंगस्टर ब्यूरो)। तालकोटारा इनडोर स्टेडियम में आई-विज़न मीडिया और टेक्निया ग्रुप ऑफ़ इंस्टिट्यूट के संयुक्त तत्वधान में वर्चस्व मीडिया फेस्ट के ग्रैंड फिनाले में प्रतिभागियों ने अपना जलवा बिखेरते हुए अपनी मदमस्त आवाज, डांस परफॉर्मेंस और सुरीले गीतों से उपस्थित दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया। वहीं भारी संख्या में दर्शकों की उपस्थिति ने कार्यक्रम के उत्साह को दोगुना कर दिया। कार्यक्रम की औपचारिक शुरुआत टेक्निया ग्रुप ऑफ़ इंस्टीट्यूट के अध्यक्ष डॉ राम कैलाश गुप्ता, टेक्निया इंस्टिट्यूट के डायरेक्टर डॉ अजय कुमार के हाथों दीप प्रज्ज्वलित कर की गयी। कार्यक्रम में 40 से अधिक कलाकारों ने संगीत, डांस और म्यूजिशियनों द्वारा बैंड प्रस्तुति से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। वहीं 50 से अधिक कॉलेजों से आए सेमी-फाइनलिस्ट प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़कर विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया।कार्यक्रम में आकर्षण का केंद्र कई विश्वविद्यालयों से आये प्रतिभागियों का सोलो डांस, ग्रुप डांस और सोलो सिंगिंग रहा। वर्चस्व-2023 के इस ग्रैंड फिनाले को 'आजा तेरी याद आयी' थीम से मशहूर संगीतकार लक्ष्मीकांत प्यारे लाल को समर्पित किया गया। जिसमें कई सुप्रसिद्ध कलाकारों ने उनके बनाये कई गानों पर प्रस्तुति दी। गायक मोहम्मद सलामत, खुशबू मुख्तार शाह, सिकंदर राजा हसन, अलोक काटदरे, प्रवेश गौर और अरविन्द शर्मा ने अपनी प्रस्तुति से शमा बाँध दिया जिससे दर्शकों की गड़गड़ाती तालियों से पूरा स्टेडियम गूंज गया। इस अवसर पर टेक्निया ग्रुप ऑफ़ इंस्टीट्यूट के अध्यक्ष डॉ राम कैलाश गुप्ता ने कहा कि इस तरह के कार्यक्रम कलाकारों को एक मंच देने के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं।

कार्यक्रम में प्रतिभागियों के उत्साहवर्धन के लिए डॉ राम कैलाश गुप्ता ने अपनी सुरीली आवाज़ में लक्ष्मीकांत प्यारेलाल को समर्पित 'ये तेरा दीवानपन' गीत गाया, जिससे प्रतिभागियों में जोश और उत्साह भर गया। वर्चस्व-2023 के ग्रैंड फिनाले के विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को उन्होंने सम्मानित किया और उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि रचनात्मकता को आगे बढ़ाने के लिए टेक्निया ग्रुप ऑफ़ इंस्टीट्यूट निरंतर प्रयास करता रहेगा।

Seven-day Diksharambh Ceremony for new students-2023-24 concluded at TIAS

"Grand Conclusion of the 2023-24 Diksharambh at the TIAS

Youngster Bureau

The grand conclusion of the seven-day orientation (induction) program for the 2023-24 batch took place at the Tecnia Institute of Advanced Studies. Starting from September 12th to September 19th, this induction program included not only students but also their parents from the first day to the last day. On the first day of the induction program, the Vice-Chairperson of the Institute, Dr. Sandhya Bindal, Director Prof. Ajay Kumar, Managing Director of Devoo, and special guest Mr. H. Y. S. Bhatia, Corporate Speaker and Eminent Personality Mr. Sunil Keshwani, Academic Dean Prof. M.N. Jha, and Development Dean Prof. Jagveer inaugurated the program with great enthusiasm. During this program, all department heads and members welcomed the new students to the academic session.

The first day was divided into two sessions: the first session welcomed students of the Management Department with BBA and MBA, and the second session welcomed students of Mass Communication and Computer Science with BA, BJMC, and BCA. The students were provided with information about the academic session and were acquainted with various aspects of the academic session by subject experts.

In the first session, Corporate Speaker Mr. Sunil Keshwani explained the importance of discipline and a positive outlook in student life.

Managing Director of Devu and special guest, Mr. H. Y. S. Bhatia, discussed the internal emotions, fears, dreams, and aspirations of individuals. The Vice-Chairperson of the Institute, Dr. Sandhya Bindal, extended her best wishes to the incoming students for the new academic session and mentioned that through this induction program, students would understand their department and the institute. She further stated that the focus of the institute is on skill development, and students will see their dreams come true in the institute, becoming successful professionals in their lives.

In the second session, the Vice-Chairperson of the Institute, Dr. Sandhya Bindal, Director Prof. Ajay Kumar, Resident Editor of Sudarshan News Mr. Mukesh Kumar, Consultant of NIESJ Professor Jagdish S. Kapoor, Academic Dean Prof. M.N. Jha, and Development Dean Prof. Jagveer inaugurated the program with great enthusiasm.

As the keynote speaker, Mr. Mukesh Kumar, Resident Editor of Sudarshan News, enlightened the students about how journalism and ethical journalism can bring about change in society. He inspired the budding journalists with examples from his own experiences.

Director Prof. Ajay Kumar extended his best wishes to all students and emphasized the need to adapt to the changing environment by training according to the national and international requirements. All department heads and members were present during both sessions and provided detailed information about their respective departments.

At the end of the program, Academic Dean Prof. M.N. Jha encouraged all students to always be diligent in education, research, and innovation. He urged students to develop their decision-making and problem-solving skills so that they can distinguish right and wrong and avoid any negative influences.

On the final day of the orientation, Dr. Manpreet Kaur Kang, Student Welfare Director of Guru Gobind Singh Indraprastha University, advised students that their knowledge would lead them to new heights.

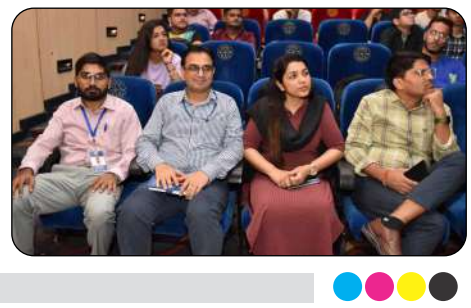

सूचना के अधिकार के प्रति बने जागरूक

सुभाष सिंह
राज्य सूचना आयुक्त, उ.प्र.

सूचना अधिकार क़ानून जिसे हम संक्षेप में आरटीआई भी कहते हैं वर्ष 2005 में अस्तित्व में आया और इसे नाम दिया गया – "सूचना अधिकार अधिनियम 2005।" उस समय मनमोहन सिंह जी प्रधान मंत्री थे और बहुत सारे एनजीओ और स्वतंत्र कार्यकर्ता सूचना के अधिकार की माँग के लिए आंदोलनरत थे।

लंबे आंदोलन के बाद यह क़ानून अस्तित्व में आया था और उस समय ये माना गया कि यह क़ानून बहुत क्रांतिकारी है और इस क़ानून के माध्यम से शासन-प्रशासन, सरकारी संस्थानों और लोक प्राधिकरण में पारदर्शिता आएगी और भ्रष्टाचार में कटौती होगी। राज्य सूचना आयुक्त के अपने साढ़े चार वर्षों के अनुभव से मैं बता सकता हूँ कि आरटीआई व्यापक लोकहित का माध्यम बन गया है। इस संदर्भ में मैं यह कहना चाहूँगा की आरटीआई के माध्यम से ऐसे बड़े-बड़े घोटाले सामने आये जो अगर आरटीआई क़ानून ना होता तो शायद सामने ना आ पाते। 18 वर्ष का इस कानून का इतिहास है। इन 18 वर्षों में सूचना अधिकार क़ानून को बहुत व्यापकता मिली और समाज में लोग जागरूक हुए – अपने अधिकारों के प्रति, अपनी स्वतंत्रा के प्रति। उनके अंदर ज्ञान की पिपाशा जागृत हुई और लोगों ने इस क़ानून का भरपूर उपयोग किया। प्रसंगवश, मैं बता दूं कि सन् 2005 में जब सूचना अधिकार क़ानून लागू हुआ, तब ये जम्मू-कश्मीर में लागू नहीं हो पाया था क्योंकि वहां धारा 370 के कारण भारत सरकार के बहुत सारे क़ानून लागू नहीं होते थे। सूचना अधिकार क़ानून भी उसी श्रेणी में था। लेकिन धारा 370 हटने के बाद अब भारत सरकार के सारे क़ानून वहाँ लागू होते हैं। उसी के साथ यह सूचना अधिकार क़ानून भी वहाँ पर लागू हो गया है। अब हम कह सकते हैं की भारत के हर राज्य, हर केंद्र-शासित प्रदेश में यह क़ानून लागू है। इस क़ानून के माध्यम से हम अगर चाहें तो सरकार के अंदर जो अपारदर्शिता है, जो भ्रष्टाचार है, उसको उजागर कर सकते हैं। अब सूचना अधिकार क़ानून के बारे में प्रारंभिक तौर पर मैं आप लोगों को सीधे-सरल तरीके से जानकारी देना चाहूंगा। कोई भी व्यक्ति जो सूचना अधिकार क़ानून के तहत जानकारी माँगना चाहता है, वो सीधे हमारे पास नहीं आ सकता है। यानी सीधे तौर पर अगर वो राज्य सूचना आयोग से या जो 10 सूचना आयुक्त हैं उनसे, या मुख्य सूचना आयुक्त से जानकारी मांगे, ऐसा संभव नहीं है। इसकी एक प्रक्रिया है। सरलतम शब्दों में अगर कहें तो कोई भी व्यक्ति जो आरटीआई लगाता है, सबसे पहले उसको लोक प्राधिकरण में जन-सूचना अधिकारी के पास अपनी अर्ज़ी लगानी होगी या अपना आवेदन देना होगा, जो सूचना अधिकार अधिनियम में धारा 6(1) (छह-एक) कहा जाता है। धारा 6(1) का मतलब है वह आवेदन जिसके माध्यम से आप सूचना माँगते हैं। सूचना अधिकार अधिनियम की धारा- 6 की उपधारा-1 कहती है कि कोई व्यक्ति, जो इस अधिनियम के तहत कोई जानकारी

मेहमान का कोना

प्राप्त करना चाहता है, उसे लिखित रूप में या इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से अंग्रेजी या हिंदी में या उस क्षेत्र की आधिकारिक भाषा में अनुरोध करना होगा जिसमें आवेदन किया जा रहा है। ऐसे शुल्क के साथ जो निर्धारित किया जा सकता है।

अब नियम-उपनियम की बात हम नहीं करेंगे केवल सीधे-सरल तरीके से हम सूचना अधिकार क़ानून के बारे में बताएंगे। तो जैसे आपने धारा-6(1) के तहत आवेदन दिया तो सर्वप्रथम जन-सूचना अधिकारी यानी संबंधित विभाग का वह अधिकारी जिसके ऊपर सूचना देने की ज़िम्मेदारी है, उसके पास वो आवेदन जाएगा। एक निश्चित अवधि इसके लिए तय की गई है- 30 दिन। 30 दिन में सूचना देना बाध्यकारी है। अगर वह सूचना नहीं देता है तो इसका मतलब वह अधिनियम का उल्लंघन कर रहा है। उसके बाद आप प्रथम अपीलीय अधिकारी के पास जाएँगे। प्रथम अपीलीय अधिकारी अगर सूचना नहीं देता है या देने का निर्देश नहीं देता है तो वह भी अधिनियम का उल्लंघन करता है। लेकिन उसके लिए 45 दिन का समय निर्धारित है। यानी अगर 30 दिन जन-सूचना अधिकारी और 45 दिन तक प्रथम अपीलीय अधिकारी सूचना नहीं देता है, तब आप यह कहते हुए हमारे पास आवेदन दे सकते हैं की मैं जन-सूचना अधिकारी के पास गया था, प्रथम अपीलीय अधिकारी के पास गया था। इन दोनों ने सूचना नहीं दी या सूचना देने से मना किया या सूचना देने का बहाना बनाया या सूचना पूरी नहीं दी या सूचना गलत दी। हमको कृपया सूचना दिलाइये। इस आशय का आवेदन लेकर जब आप सूचना आयोग में आते हैं तो इसको हम द्वितीय अपील कहते हैं। यानी आप हमारे पास सीधी अपील ना करके आप द्वितीय अपील के रूप में आ सकते हैं। फिर उसकी हम सुनवाई कर सकते हैं।

आप ये मान सकते हैं की जो भी पत्रावली द्वितीय अपील के रूप में हमारे पास आयी तो उस पत्रावली में जन-सूचना अधिकारी, प्रथम अपीलीय अधिकारी दंड का भागीदार है। ये हमारे विवेक पर है की सूचना दिलाते हुए आपको अनसुना करने के लिए या आपको सूचना ना देने के लिए हम जन-सूचना अधिकारी को दंडित कर सकते हैं। इसके साथ हम उसको प्रतिकूल प्रविष्ट भी दे सकते हैं। प्रथम अपीलीय अधिकारी को भी हम दंडित कर सकते हैं। प्रसंगवश, मैं बता दूं सूचना अधिकार कानून में जो प्रावधान है उस प्रावधान के अनुसार जन-सूचना अधिकारी या प्रथम अपीलीय अधिकारी दंड पा सकता है और यह एक अर्ध-न्यायिक प्रक्रिया है। इसके बाद, अगर आप या जन-सूचना अधिकारी रुष्ट होता है, असंतुष्ट होता है तो वो हाई कोर्ट जा सकता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं न्याय प्रक्रिया के तहत आप सूचना प्राप्त कर सकते हैं।

सूचना प्राप्त करने के लिए आप न्याय प्रक्रिया के तहत विधिसम्मत तरीक़े से अपनी लड़ाई लड़ सकते हैं।

पुस्तक समीक्षा

पत्रकारिता के सिद्धांतों और मौलिकता का अनूठा मेल

प्रो(डॉ) अरुण कुमार भगत की नई पुस्तक 'हिन्दी की आधुनिक पत्रकारिता' छात्रों की जिज्ञासा को बढ़ानेवाली और उसे व्यावसायिक संपूर्ण ज्ञान प्रदान करनेवाली है। इसे रोचक अंदाज में पाठ्य सामग्री से परिचित कराने के लिए तैयार किया गया है। यह पुस्तक सिद्धांत और व्यावहारिक शैली के मेलजोल से रची गई है। पत्रकारिता की शिक्षा के लिए बाजार में पुस्तकों की बहुतायत है। इनमें से ज्यादातर पुस्तकों ने एक ढर्रे पर चलकर परिभाषाओं और कार्यप्रणाली की जानकारियों से 'बोझिलता के कोलाज' तैयार किए हैं। लेकिन पत्रकारिता की पुस्तकों की इस भीड़ में प्रो.(डॉ) अरुण कुमार भगत की नई पुस्तक 'हिन्दी की आधुनिक पत्रकारिता' ताजा हवा, फूल और बादल का एहसास कराती है। ताजा हवा इसलिए, क्योंकि यह प्राणदायक, ऊर्जावर्द्धक और गतिमान् होने के साथ ही आलस-उबासी को भगाती है। फूल और बादल का एहसास इसलिए, क्योंकि इनमें कोमलता का भाव होता है, जो भावनाओं और कल्पनाओं में रंग भरते हैं, जिनसे चोट नहीं लगती। यानी ये कल्पनाशील होते हैं, कल्पनाओं में पंख लगाते हैं। हवा, फूल और बादल की इन कसौटियों पर प्रो(डॉ) अरुण कुमार भगत की नई पुस्तक 'हिन्दी की आधुनिक पत्रकारिता' बिलकुल खरी उतरती है। 'हिन्दी की आधुनिक पत्रकारिता' में पत्रकारिता के नवांकुरों को प्रस्फुटित होने के लिए जिस उपजाऊ जमीन की जरूरत है, वह इसमें मौजूद है।

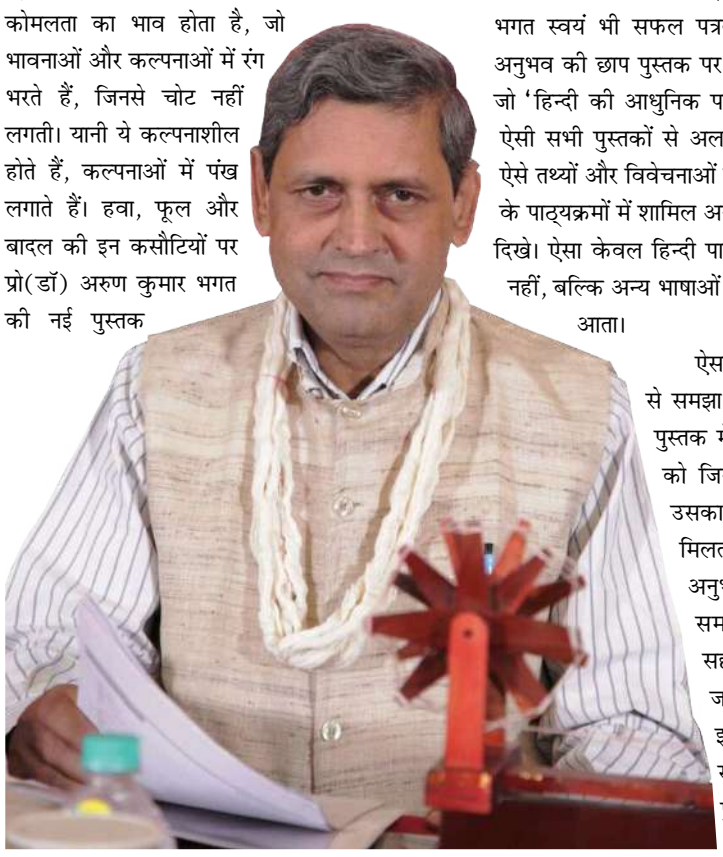

पत्रकारिता का ककहरा सिखानेवाली यह पुस्तक बेहद रोचक अंदाज में आधुनिक पत्रकारिता से परिचय कराती है। इस पुस्तक से गुजरनेवाला पाठक और जिज्ञासु इस पवित्र पेशे के उद्देश्य, सामाजिक दायित्व को समझता हुआ इस तरह समाचार लेखन, संकलन, संपादन, पृष्ठ सज्जा और संपादकीय विभाग की कार्यशैली को आत्मसात् कर लेता है कि शिक्षा पूरी कर लेने के बाद उनके लिए अखबार का दफ्तर अजायबघर नहीं रह जाएगा। यानी यह पुस्तक पत्रकारिता के छात्रों को सिद्धांत से लेकर प्रयोग तक की पूर्ण शिक्षा देती है।

प्रो. भगत की नई पुस्तक पत्रकारिता के छात्रों को ध्यान में रखकर लिखी गई है। चूँकि डॉ अरुण कुमार भगत स्वयं भी सफल पत्रकार रहे हैं, इसलिए उनके अनुभव की छाप पुस्तक पर स्पष्ट तौर पर नजर आती है, जो 'हिन्दी की आधुनिक पत्रकारिता' को अब तक की ऐसी सभी पुस्तकों से अलग बनाती है। इस पुस्तक में ऐसे तथ्यों और विवेचनाओं की भरमार है, जो पत्रकारिता के पाठ्यक्रमों में शामिल अन्य पुस्तकों में शायद ही कहीं दिखे। ऐसा केवल हिन्दी पाठ्य पुस्तकों के संदर्भ में ही नहीं, बल्कि अन्य भाषाओं की पुस्तकों में भी नजर नहीं आता।

ऐसा पुस्तक के कुछ उदाहरणों से समझा जा सकता है। प्रो. भगत ने पुस्तक में समाचार चयन के सिद्धांत को जिस तरह रेखांकित किया है, उसका उदाहरण कहीं अन्यत्र नहीं मिलता। असल में समाचार चयन अनुभवजनित कर्म है, जिसे समाचार कक्ष के कनिष्ठ सहयोगियों पर नहीं छोड़ा जाता। इसकी एक बड़ी वजह इसका लंबे अनुभव से मिली सीख ही है। चूँकि पाठ्य पुस्तकों में अनुभव से मिली

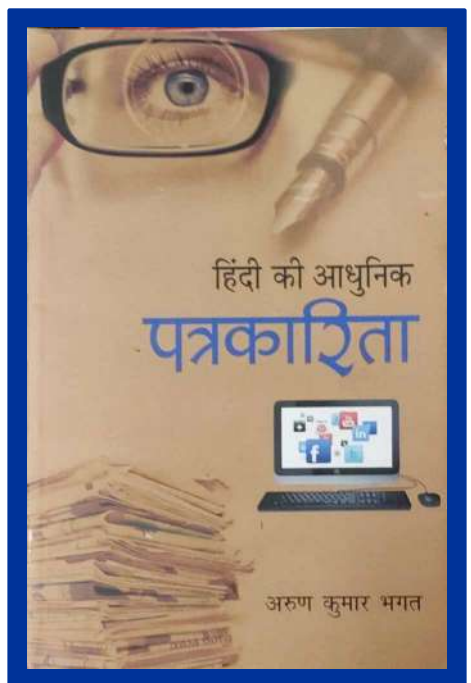

हिंदी की आधुनिक पत्रकारिता
लेखक : प्रो.(डॉ.) अरुण कुमार भगत
प्रकाशक : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत (नेशनल बुक ट्रस्ट)

इस सीख को सिद्धांत के रूप में नहीं शामिल किया गया है, इसलिए अखबार में काम करनेवाले प्रतिभासंपन्न नए उपसंपादक भरोसे के साथ न कोई फैसला ले सकते हैं और न ही अपने वरिष्ठ सहयोगी को सुझाव ही दे सकते हैं। लेकिन इस कमी को 'हिन्दी की आधुनिक पत्रकारिता' पुस्तक ने दूर कर दिया है। पत्रकारिता में लंबे अनुभव के साथ समाचार संकलन या चयन की जो समझ विकसित होती है, इस पुस्तक में इसे बतौर सिद्धांत शामिल किया गया है, जो अन्यत्र किसी भी पुस्तक में नहीं दिखता। इसे एक पीढ़ी के व्यावहारिक अनुभव को दूसरी पीढ़ी तक सिद्धांत के रूप में पहुँचाने की सीढ़ी के रूप में अक्षरबद्ध करना माना जाएगा। इसे प्रो भगत का मौलिक काम माना जाएगा।

इसी तरह इस पुस्तक का एक और अनमोल पहलू है समाचार के विभिन्न विधाओं से जुड़ा संस्कार। इस सृष्टि में मानव जीवन तो 16 संस्कारों से सुसज्जित है ही, साथ ही इससे जुड़ा हर पहलू भी संस्कारों से जुड़ा है। इसमें भाषा और बोली का संस्कार भी है। भाषा और बोली चूँकि शब्दों से बने हैं, इसलिए शब्दों का भी संस्कार है। जब शब्दों का संस्कार है तो इन शब्दों से तैयार समाचारों के प्रस्तुतीकरण का भी संस्कार होगा ही। समाचारों के प्रस्तुतीकरण का संस्कार कैसा होता है, क्यों होता है और संस्काररहित प्रस्तुतीकरण किस तरह अनर्थकारी हो सकता है, इस पुस्तक में इसकी विस्तार से चर्चा है और यह चर्चा पत्रकारिता से जुड़ी किसी अन्य पुस्तक में नहीं दिखती है। इस पुस्तक में पत्रकारिता की अलग-अलग विधाओं से परिचय तो कराया ही गया है, लेकिन इसके साथ-साथ इन विधाओं की बारीकियों और जटिलताओं को अलग-अलग उदाहरणों के साथ इस तरह प्रस्तुत किया गया है कि कठिन-से-कठिन विषय बेहद सरल नजर आने लगते हैं। एक पत्रकार के लिए सबसे जरूरी और पहली चीज है समाचार की पहचान। 'नोज फॉर न्यूज' जुमला इसी से निकला है। लेकिन कोई जानकारी समाचार है या नहीं, इसके लिए जिस तरह की दृष्टि और सूँघने की शक्ति चाहिए, वह किस तरह स्वभाव का हिस्सा बन जाए, इस पुस्तक में उसके गुर उदाहरणों के जरिए सिखाया गया है। समाचार संकलन, समाचार लेखन, समाचार संकलन के लिए स्रोत की पहचान, समाचार लेखन की विधि, समाचार लेखन की विधाएँ, समाचार की प्रस्तुति, समाचार का विश्लेषण; ये सब हुनर कैसे आए, इसे बताने, जताने और सिखाने के लिए न केवल खबरों की मदद ली गई है, बल्कि कई हुनरमंदों के उदाहरणों से इसे समझाया गया है। इस पुस्तक में जटिल-से-जटिल विषयों को रुचिकर, मनोरंजक और किस्सागोई की शैली में प्रस्तुत किया गया है। जब शैली ऐसी हो तो छात्रों के लिए न सीखना कठिन रह जाता है, न परीक्षाओं में अच्छा नहीं करने का डर रह जाता है और न ही अखबार के दफ्तर में काम करने को लेकर आत्मविश्वास की कमी। यानी यह पुस्तक पत्रकारिता के छात्रों की जिंदगी आसान बनानेवाली तो है ही, साथ ही उनकी पत्रकारीय मेधा को स्वभाव का हिस्सा बनानेवाली भी है।

Importance of Education In The Life

Rakesh Kumar

Importance of education in our Life – Education means studying subjects for deeper knowledge and the understanding of the subject which we are going to use in our daily lives. The term education is not limited to our bookish knowledge but it stands for learning that is obtained and experienced by us, outside the books or classroom. Education changes our perspective on life.

The importance of Education starts from our childhood which begins at home and education is a lifelong process. A society without education can not give a bright future to our world.

Education is an important tool that enables a person to know his rights and duties towards his family, society, and country. Education develops the vision of a person to see the world and also the capacity to fight against the wrong things, like, injustice, corruption, violence etc. The study is not a secret that it is the main weapon to improve our present and future lives. It also improves the confidence of a person in his/her life as confidence is an important key to success.

Education is a crucial aspect of personal and professional development. It allows individuals to acquire the knowledge and skills necessary to succeed in their chosen field and it can also provide opportunities for personal growth and fulfillment. Education is an important process in our life where a person acquires basic knowledge from other people. Education is a process where a person.

The main objective of education is to help a person live his life with dignity while contributing his part to society.

Education is essential for economic development. A well-educated population is more productive and innovative, which can lead to economic growth and prosperity.

- Develop his Skill.
- Learn Moral Skills.
- Learn Communication Skills.
- How to live in a society.
- Learn how to identify what is wrong and what is right.
- Learn to make the right decision at the right time.

Further education can help reduce poverty and inequality as it can provide individuals from disadvantaged backgrounds with the skills and knowledge they need to succeed. This is crucial for building a strong and sustainable economy.

The role of Education in our society is huge. Education is the key to opening more resources for growth and progress. Education in our lives provides stability. You must be heard that everything can be divided but your education can't with the help of your degree and knowledge. You can increase your chances to make your career better than others.

Education gives hope to everyone for the better life they want It is a kind of power that works in the life of a person as magic to build it very much better than he has without education. I want to conclude my article with the words that every person should be educated so that we can make our nation proud. Crimes can be stopped with an increase in the rate of literacy every nation should encourage their people to education. Stopping a child from school means stopping him from achieving his goals in future life.

Autism Spectrum Disorder (ASD)

Madhubala

Autism, now called autism spectrum disorder (ASD), is a neurodevelopmental disorder. ASD is a developmental disability caused by differences in child's brain. People with ASD may behave, interact and learn in ways that are different from other people. They may have trouble with social interactions and with interpreting and using nonverbal and verbal communication.

Autism spectrum disorder begins in early childhood and eventually causes problems functioning in society — socially, in school and at work, for example. Often children show symptoms of autism within the first year. A small number of children appear to develop normally in the first year, and then go through a period of regression between 18 and 24 months of age when they develop autism symptoms. While there is no cure for autism spectrum disorder, intensive, early treatment can make a big difference in the lives of many children.

People with autism have trouble with communication. They have trouble understanding what other people think and feel. This makes it hard for them to express themselves, either with words or through gestures, facial expressions, and touch.

People with autism might have problems with learning. Their skills might develop unevenly. For example, they could have trouble communicating but be unusually good at art, music, math, or memory. Because of this, they might do especially well on tests of analysis or problem-solving.

More children are diagnosed with autism now than ever before. But the latest numbers could be higher because of changes in how it's diagnosed, not because more children have a disorder.

Autism symptoms range from mild to severely disabling, and every person is different. We can consider the following signs of autism Signs of autism include difficulties with social interactions, such as:

- Child doesn't look at you when you call their name or responds inconsistently.
- Child doesn't smile widely or make warm, joyful expressions by the age of 6 months.
- Child doesn't engage in smiling, making sounds and making faces with you or other people by the age of 9 months.
- Child doesn't babble by the age of 12 months.
- Child doesn't use gestures such as reaching or waving by the age of 12 months.
- Child doesn't play any back-and-forth games, like "peek-a-boo," by the age of 12 months.
- Child by the age of 16 months.Toddler doesn't speak any meaningful, two-word phrases (not including imitating or repeating) by the age of 24 months.
- Any loss of speech, babbling or social skills.
- Signs of autism also include specific behaviors, called restricted or repetitive behaviors or interests:
- Child often lines up toys or plays with toys the same way every time.
- Child must follow certain routines or has extreme reactions to small changes in routine.
- Child has obsessive or very unusual interests.
- Child has significant sensory aversions, like dislike of loud noises, dislike of how certain clothes fit or feel or very picky eating.
- Child has sensory-seeking

behaviors, like looking out of the corner of their eye at objects (peering), sniffing or licking objects.

Autism is four times more common in boys than in girls. It can happen in people of any race, ethnicity, or social background. Family income, lifestyle, or educational level doesn't affect a child's risk of autism. But there are some risk factors:

Complementary treatments may help boost learning and communication skills in some people with autism. Complementary therapies include music, art, or animal therapy, like horseback riding and even swimming with dolphins.People with ASD may be referred to a health care provider who specializes in providing behavioral, psychological, educational, or skill-building interventions. These programs are often highly structured and intensive, and they may involve caregivers, siblings, and other family members. These programs may help people with ASD:

- Learn social, communication, and language skills
- Reduce behaviors that interfere with daily functioning
- Increase or build upon strengths
- Learn life skills for living independently

What is Indian classical music?

Brijesh Chaturvedi

Indian classical music is a centuries-old tradition that has been passed down through generations. It is a form of music that is deeply rooted in Indian culture and has been an integral part of the country's history.Indian classical music is based on two main forms: Hindustani and Carnatic. Both forms are based on the same principles but have distinct differences in their approach to composition and performance. Hindustani music is more improvisational and focuses on the use of ragas, while Carnatic music is more structured and follows a set of rules.

The main instruments used in Indian classical music are the sitar, tabla, sarod, and veena. These instruments are used to create a unique melodic and rhythmic sound. The sitar is a stringed instrument plucked with a plectrum, while the tabla is a pair of drums played with the hands. The sarod is a fretless lute that is plucked with a bow, and the veena is a plucked string instrument. It is often accompanied by singing, which is known as "khayal". This type of singing is based on improvisation and is used to express emotions and feelings. The lyrics of the songs are usually in Hindi or Urdu, but can also be in other languages.Indian classical music has been influenced by many different cultures over the centuries, including Persian, Arabic, and Turkish. This has resulted in a unique sound that is both traditional and modern.

खुद को लगातार एक्सप्लोर कर रहे हैं शाहरुख खान

अमित शर्मा

प्रसिद्ध अभिनेता नसीरूद्दीन शाह से एक इंटरव्यू में सुपरस्टार अमिताभ बच्चन की अदाकारी के बारे में पूछा गया था। नसीर का जवाब था –आपकी प्रतिभा आपकी पसंद में निहित है। शायद इसीलिए अमिताभ सुपरस्टार हुए और नसीरुद्दीन शाह ने बेहतरीन अभिनेताओं की जमात में अपनी जगह बनायी।

अपनी नयी फिल्म 'जवान' से शाहरुख खान ने एक बार फिर दिखा दिया है कि वो क्यों खुद को लास्ट सुपरस्टार कहते हैं। फिल्म ये साबित करती है कि शाहरुख इंडस्ट्री के सबसे इंटेलीजेंट स्टार हैं। शाहरुख एक स्टार होने के साथ-साथ एक बेहतरीन बिजनैसमैन भी हैं। शायद यहीं बात उन्हें पिछले चार दशकों से सुपरस्टार बनाए हुए है। उनको ये अच्छी तरह पता है कि उनका नाम एक ब्रांड है और इस ब्रांड को बनाए रखने में वो अपने समकालीन स्टार से आगे दिख रहे हैं। पहले 'पठान' और अब 'जवान' ये दिखाती है कि शाहरुख लगातार खुद को एक्सप्लोर कर रहे हैं। बदलते वक्त के साथ उनकी भूमिका का चुनाव ये दिखाता है कि उन्हें पता है कि सिर्फ पुरानी रोमांटिक हीरो की इमेज से अब काम नहीं चलने वाला है। शाहरुख ये दिखा रहे हैं कि अपनी उम्र के साथ अपने पुराने स्टारडम को कैसे संभाला जाता है। हालांकि हिन्दी फिल्म इंडस्ट्री के लिए भले ही ये नयी बात लगे लेकिन साउथ इंडियन फिल्म इंडस्ट्री के अभिनेता लगातार इस राह पर चलते रहे हैं। इस फिल्म से शाहरुख भी खुद अपने लिए ये नया फार्मूला चुनते नजर आते हैं। मगर कौन सा फार्मूला कब और कहां लागू करना है इसकी समझ ही तो शाहरुख को हिन्दी फिल्मों के दूसरे स्टार से अलग बनाती है। फिल्म में वो अपनी उम्र को ही अपना हथियार बनाते नजर आते हैं। ये शाहरुख का ही दम है जो फिल्म के एक दृश्य में वो खुद को सीनियर सिटिजन कहलवाने से भी परहेज नहीं करते।

शाहरुख की नयी फिल्म जवान सिर्फ और सिर्फ ब्रांड शाहरुख को पर्दे पर दिखाती है। शाहरुख खान ने फिल्म में खुद के लुक पर एक से बढ़कर एक एक्सपेरीमेंट किए हैं। आप एक शाहरुख को देखने जाएंगे लेकिन आपको कई शाहरुख दिखायी पड़ेंगे। जवान की खास बात ये है कि ये सारे एक्सपेरीमेंट शाहरुख की सुपरस्टार की इमेज के भीतर किए गए हैं। फिल्म में फार्मूला फिल्मों के सारे मसालों का इस्तेमाल किया गया है। बल्कि इसे 56 भोग भी माना जा सकता है। ऐसा कोई फार्मूला बचता नहीं जो फिल्म में डाला नहीं गया हो।

फिल्म की हिरोइन नयनतारा भी प्रभावित करती हैं। वो साउथ की फिल्मों का जाना-पहचाना नाम है लेकिन हिन्दी फिल्मों के दर्शकों के लिए वो फ्रेश चेहरा ही हैं। साउथ के जानदार अभिनेता विजय सेतुपति फिल्म के मुख्य विलेन हैं जो कई दृश्यों में शाहरुख पर भी भारी पड़ते दिखते हैं। इसी तरह वेब सीरिज फैमिली मैन से फेमस हुई मां-बेटी की जोड़ी प्रियामनी और अश्लेषा ठाकुर भी फिल्म में हैं। साथ ही सान्या मल्होत्रा, रिद्धि डोगरा, सुनील ग्रोवर, ओंकार दास जैसे जाने-पहचाने चेहरे भी हैं।

फिल्म की सबसे खास बात है इसकी गति और फिल्म में लगातार आने वाले सरप्राइज एलिमेंट। खुद शाहरुख जब-जब पर्दे पर आते हैं तो एक सरप्राइज एलिमेंट ही लाते हैं। शाहरुख का डबल रोल हो, उनकी लेडिज गैंग हो या फिर दीपिका और संजय दत्त जैसे स्टार की सरप्राइज इंट्री। फिल्म लगातार उत्सुकता जगाए रखती है। इंटरवल के पहले तो फिल्म बहुत ही तेज गति से

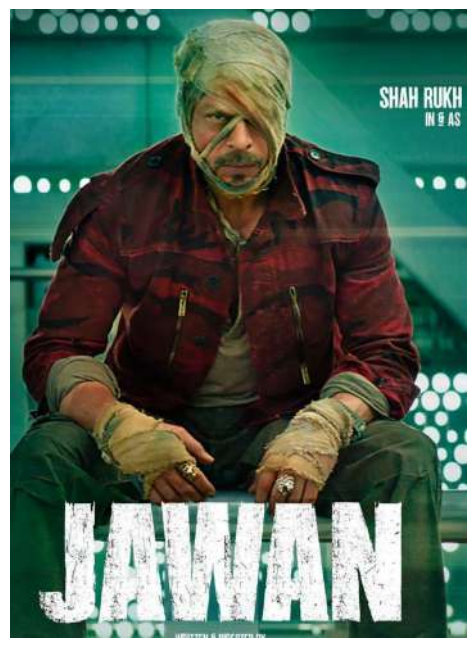

चलती है। इंटरवल के बाद रफ्तार थोड़ी सी हल्की पड़ती है लेकिन वहां इमोशन का तड़का लगा दिया जाता है। फिल्म के एक्शन दृश्य बहुत जानदार है।

यानि कहे तो फिल्म पूरी तरह से पैसा वसूल है। फिल्म की मार्केटिंग भी बहुत दमदार तरीके से की गयी। फिल्म का प्रोमो जो दर्शकों को जो प्रॉमिस करता है, फिल्म उससे कहीं ज्यादा डेलिवर करती है। वहीं बेटे को

बाइस्कोप

हाथ लगाने से पहले बाप से बात करो – जैसे डॉयलाग की शाहरुख के रियल लाइफ इंसीडेंट की तरह मार्केटिंग की गयी। ऐसे में दर्शकों को फिल्म में मजा तो आना ही था।

फिल्म के निर्देशक एटली तमिल फिल्म इंडस्ट्री के एक जाने-पहचाने नाम हैं। कई सफल कमर्शियल फिल्में उन्होंने दी हैं। जवान शाहरुख की होम प्रोडक्शन हैं। ऐसे में ये जाहिर सी बात है कि कैसी फिल्म बनानी है, ये चुनाव उनका ही था। फिल्म पूरी तरह से दक्षिण भारतीय फिल्मों के मसालों से भरी हुई है। लेकिन इनका इस्तेमाल इतना संतुलित और बढ़िया तरीके से किया गया है कि फिल्म दृश्य दर दृश्य दर्शकों को बांधे रखती है। फिल्म में साउथ की फिल्मों के कई सफल दृश्यों के दुहराव से भी पहरेज नहीं किया गया है। मसलन कुछ दृश्य 'बाहुबली' के दृश्यों की याद दिला देते हैं, तो एक एक्शन सिक्वेंश में शाहरुख के हाथ का हथियार 'राउडी राठौर' के एक्शन सीन की याद दिलाता है। फिल्म के कई दृश्य और शाहरुख का लुक भी रजनीकांत की फिल्म 'शिवाजी' की याद दिलाते हैं। इसी तरह अनिल कपूर की फिल्म 'नायक' की तरह इस फिल्म में भी शाहरुख खान अपनी लेडिज गैंग के साथ गंभीर समस्याओं का हल मिनटों और घंटों में देते दिखते हैं। 'शिवाजी' और 'नायक' की तरह 'जवान' में भी व्यवस्था के खिलाफ आक्रोश को एक सुपरस्टार की इमेज के साये में दिखाया गया है। ये फार्मूला रजनीकांत बहुत पहले से सफलता से इस्तेमाल कर रहे हैं। शाहरुख भी इस फिल्म में रजनीकांत के दिखाए रास्ते पर चलते नजर आते हैं। लेकिन रिलीज होने के बाद फिल्म को विचारधारा के समर्थन और विरोध से भी जोड़ दिया गया है। एक सज्जन ने तो फेसबुक पर यहां तक टिप्पणी कर दी कि पिछले तीस सालों से उन्होंने कोई फिल्म सिनेमा हॉल जाकर नहीं देखी, मगर जवान वो बड़े पर्दे पर ही देखेंगे। अगर आपको भी लगता है कि सामाजिक रुप से क्रांति लाने वाली कोई फिल्म देखने आप जा रहे हैं तो आपको निराशा ही हाथ लगेगी।

जवान शुद्ध रुप से कमर्शियल मसाला मूवी है। आप परिवार के साथ फिल्म देखिए। बीवी-बच्चों के साथ आनंद लीजिए। शाहरुख को पर्दे पर देखकर तालियां बजाइए। इससे ज्यादा की उम्मीद इस बजट की फिल्म से करना भी बेमानी है।

Impact of Social Media

Chayan

In today's world, social media is one of the biggest mainstream platforms where one can express their emotions, feeling, workspace, brand, advertisement product or brand promotion, etc. but as the world grows social media platforms also start growing and keep themselves updated concerning the modern generation media. the mainstream platform can have various impacts on children, youngsters as well as on adults these impacts can be related with day to day life and also professional work.

Positive Impact of Social Media

- Social media can be helpful for a student for instant doubt-solving in the absence of a mentor or teacher.
- Social media helps reach millions of people with a single post or a reel. This includes YouTube, Instagram, Facebook, Twitter, etc apps it brings a dynamic impact in a nation or a society by millions of users with a single post.
- Social media help build a career online. It can help one to work from home comfortably and earn.
- Social media can be helpful for a business-based organization for example School, company, college, or institute can build a website and also various accounts to grow in the future and create awareness in people.
- Having a social network, especially during these social distancing times, is incredibly important and has been shown to have a positive effect on mental health and well-being. It allows students to connect with like-minded peers, breaking limitations of distance and time. This can be particularly valuable for minority youth, who may have difficulty finding others like themselves.
- In addition to the benefits of classroom learning social media provides through sites like YouTube, social media helps students access mental health and well-being information, which can be hard to do offline without stigma.

Negative Impact of Social Media

- Social media can be harmful to a minor or children as spending more time on social media can be addictive and can lead to less educational proficiency
- Now a day's social media platforms have a danger and risk of account hacking and websites which may lead to the leakage of personal information.
- Tweets and text on social media are great ways to express but with wrong usage, it can create bigger fuzz something inappropriate about someone can lead to a negative impact on the person as well as their integrity.
- Students are more connected than ever before through social media, especially during these difficult times, when they are physically distanced from their family, friends, and peers. While social media provides many benefits, such as giving students the chance to express themselves creatively, learning opportunities, and the chance to connect with others, social media can also harm students, both physically and mentally.

RNI No.: DEL/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Amit Sharma responsible for selection of News under PRB Act. All rights reserved.
Email :
youngster@tecnia.in